

पैरिस २६ अक्टूबर १९४० -

प्रिय चौरसिया -

आपका पत्र मिला। मुझे लख है कि कि आपका पैरिस आना हो रहा है। आपको आमंत्रण मिला है "यूजेन गीने" से - १२ नवम्बर ४०। हम इस समय पैरिस में ही होंगे। नार्वे के उपरान्त अक्टूबर में ही - मालूम नहीं जाना होगा या नहीं - अगर गये तो २५ अक्टूबर तक गहरा वापिस पैरिस में आ जायेंगे।

इस बार गहरा मिलना होगा। मैं आपको भूला नहीं हूँ। सिर्फ़ अफसोस रही था कि आपका संगीत मोपल में न मिल सके। यह कभी मैंने पैरिस में ही पूरी की। बाकायदा श्री गीने, दूसरों को टेलीफोन करके उनसे "यूजेन द लय" में मिलने गया। उसे स्नेह से मिली और आपका टेप सुना। पसन्द आया। इन्होंने अपने संग्रह भी खताये, बेहद अच्छे थे। ये गुणाकात दिसम्बर ७८ में हुई थी। तब से मिलना चाहता था, व्यस्तता कुछ ऐसी हो रही कि न मिल सका।

फिर कहना चाहता हूँ कि यह जानिये - फ्रांस परेश है। यहाँ आने के लिये आपके फ्रांसीसी विजा चाहिये। Townist Visa काफी देखा तीन माह का। पुरानी शर्तें न करे - अपने सारे कागजात पासपोर्ट, चैक बगैरा सब सब का साथ लेके आइये। प्रोग्राम के कुछ दिव पहले आना जरूरी होगा। यहाँ की जिन्दगी बहुत कठिन है। परदेसी लोगें से लगे न तो यहाँ काम करने की इजाजत है, नही ३ माह से ज्यादा रहने दिया जाता है। इस बात के श्रोयती दूसरों की मदद बहुत जरूरी

है। क्या इस बार फिर आप उनके घर रह सकेंगे। इसका पूरा पता करें। उनका घर हमारे घर से दूर नहीं - हमारे बड़ी आसानी से इस मिल सकेंगे।

देश की बड़ी याद आती है। मोपाल के मेरे करीब का मेरा कला था। अगर मैं आपके काम करने के लिये बेंचें कोई माऊ तो ही संग्रहणा कि मेरा आना सफल हुआ। पौंसि आन पर यही लगा कि मैं (दुद बेंचें) लेकर लौटा हूँ।

बहुत निर आ याद के साथ -

जा